एक मधुर सरप्राइज़ २०१६ के प्रवेश द्वार पर

०१ दिसम्बर २०१५

समस्त प्रियजनो,

छुट्टियों की शुभ-कामनाएँ ! दिसम्बर माह के दौरान, विश्व भर में लोग उत्सव मनाने के आनन्दमय भाव से भरे होते हैं। इस समय परिवार, मित्र एवं पड़ोसी आपस में एक दूसरे के प्रति शुभ-कामनाएँ अभिव्यक्त करते हैं तथा खुशियाँ मनाते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, यह माह हमें स्वयं के अन्तर में, परस्पर एक दूसरे में, तथा हमारे संसार में व्याप्त दिव्यता को पहचानने का एक और अवसर प्रदान करता है। इस पूरे वर्ष के दौराण श्री गुरुमाई ने अपने सन्देश के उपहार द्वारा हमें अपने दिव्य स्वरूप को अनुभव करने में मार्गदर्शन प्रदान किया :

मुड़ो
अन्तर की ओर
करो सहजता से
ध्यान

जैसे जैसे वर्ष २०१५ का समापन निकट आ रहा है, सिद्धयोग पथ पर हम नववर्ष की ओर बढ़ रहे हैं। यह समय है नववर्ष दिवस पर आयोजित होने वाले सार्वभौमिक सिद्धयोग सत्संग : *एक मधुर सरप्राइज़* की तैयारी करने का।

पिछले वर्ष इस समय, श्री गुरुमाई का सन्देश ग्रहण करने के लिए उत्सुक, मेरे परिवार ने ऑडिओ वेबकास्ट वार्ता में भाग लिया था। ***"सीखने के लिए सुनने की शक्ति, सुनने के लिए सीखने की शक्ति।"***

शिक्षक, स्वामी ईश्वरानन्द, ने स्पष्ट रूप से निर्देशित किया था कि श्री गुरुमाई के शब्दों को ग्रहण करने हेतु किस प्रकार तैयारी की जाए- इसे किस प्रकार अपनी सम्पूर्ण सत्ता के साथ सुना जाएँ। स्वामी जी ने ध्यान से सुनने की योग्यता को प्रखर करने हेतु एक सुझाव दिया, कि प्रकृति में व्याप्त ध्वनियों को केन्द्रित होकर सुना जाए।

मेरा परिवार प्रकृति के सान्निध्य में अत्यन्त आनन्द का अनुभव करता है, इसलिए हमने इस अभ्यास को बहुत ही उत्साह के साथ स्वीकार किया। मेरी आठ वर्षीय पुत्री ने कहा कि प्रकृति की ध्वनियों को सुनना उसे बहुत प्यारा लगता है क्योंकि "ये ध्वनियाँ हर बार कुछ न कुछ अलग सी सुनाई देती हैं और फिर मैं तरोताज़ा महसूस करती हूँ।"

एक मधुर सरप्राइज़ सत्संग से पहले के कुछ दिनों में, जब मैंने अपनी सम्पूर्ण सत्ता के साथ सुनने पर केन्द्रण किया तो नई अन्तर्दृष्टियाँ और प्रेरणाएँ मेरे अन्तर में उभरने लगीं। मैंने यह भी ध्यान दिया कि अपनी कुछ चुनौतियों पर मेरा केन्द्रण प्रखर होने लगा है। और आने वाली चुनौतियों को सोलझाने हेतु स्पष्ट आन्तरिक मार्गदर्शन भी उभरने लगे।

जब मैंने *एक मधुर सरप्राइज़* सत्संग में श्री गुरुमाई का सन्देश प्राप्त किया, तो मैं श्री गुरुमाई की सिखावनी में उसी प्रसंग को सुनकर आश्चर्यचकित और कृतज्ञ हो गई, जो मेरे अन्तर में उठ रही थी। श्री गुरुमाई के सन्देश को यथासम्भव सम्पूर्णता से ग्रहण करने की इच्छा से, मैंने स्वयं भी और अपने परिवार के साथ भी पूरे वर्ष भर उनके सन्देश और सिखावनियों के अध्ययन हेतु केन्द्रित प्रयास किया।

मैंने सीखा कि, मेरे लिए श्री गुरुमाई के सन्देश के अभ्यास का सशक्त प्रवेश-द्वार है, प्रकृति के सान्निध्य में शान्त बैठना। जब मैं प्रायः अपने घर के पीछे के आँगन में बैठती हूँ, तब मैं उत्सुकतापूर्ण सजगता से, हवा और जीव-जन्तुओं की ध्वनियों को सुनती हूँ तथा उनकी गतिविधियों का अवलोकन करती हूँ। जैसे समय गुज़रता गया, मुझे गहरे सम्बन्ध तथा सौम्य अनासक्ति दोनों ही भावों की अनुभूति होने लगी। मेरा ध्यान बहुत नैसर्गिक रूप से ही अन्तर की ओर मुड़ने लगा।

इस अनुभव ने मेरे ध्यान के अभ्यास को शिक्षित किया। मैंने देखा कि जब मैं प्रकृति के सान्निध्य में बैठकर अवलोकन करती हूँ तब मैं उत्तरोत्तर एक साक्षी अवस्था की ओर अग्रसर होने में समर्थ होती हूँ, इसी प्रकार जब मैं ध्यान के लिए बैठती हूँ, तब भी यही प्रक्रिया होती है। मेरा ध्यान गहरा होने लगता है, मैं अपने विचारों से पृथक हो जाती हूँ, और मैं अपनी आन्तरिक दिव्यता की अनुभूति कर पाती हूँ।

एक परिवार के रूप में २०१५ में वर्ष भर, हमने स्वयं को प्रकृति के साथ तल्लीन होने का अभ्यास दोनों तरह से जारी रखा- जहाँ हम रहते हैं वहाँ की बाह्य प्रकृति और वीडिओ चित्रों की शृंखला- ***प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित करें,*** के माध्यम से। जैसे-जैसे हम प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ते

गए, हमने पाया कि समय के सम्बन्ध में हमारी समझ भी गहरी होती गई। हमने बदलते मौसमों तथा हर नए मौसम द्वारा अपने साथ लाए आशीर्वादों के प्रति गहनतम कृतज्ञता महसूस की। चन्द्रमा को अपनी नित्य बदलती कलाओं के साथ देखते हुए हमें लगा जैसे वह मन्द गति से सरकते हुए समय पर मुहर अंकित कर रहा हो। इन परिवर्तनों के बीच, हमने एक अन्तर निहित अनन्तता- सर्वदा विद्यमान कृपा के प्रवाह को महसूस किया।

हम, *एक मधुर सरप्राइज़* २०१५ में श्री गुरुमाई की सिखावनियों के लिए बहुत कृतज्ञ हैं। इसने इतने महान परिणाम को जन्म दिया! अब, एक परिवार के रूप में हम, *एक मधुर सरप्राइज़* २०१६ के लिए उत्साह पूर्वक तैयार हो रहे हैं। मेरी आठ वर्षीय पुत्री के लिए पूरे सत्संग में भाग लेने का यह पहला अवसर है और वह एक तरह के स्पर्शनीय उत्साह से भर गई है।

हम बहुत ही व्यावहारिक तरीके से तैयारी कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, हमने योजना बनाई है कि हम फिर से ऑडिओ वेबकास्ट वार्ता, ***"सीखने के लिए सुनने की शक्ति, सुनने के लिए सीखने की शक्ति"*** में भाग लें और इस बात पर मनन करें कि स्वामी जी हमें जो सिखा रहे हैं, उसे किस प्रकार आगे कार्यान्वित करें।

हमने *एक मधुर सरप्राइज़ सत्संग* के दिन तक पर्याप्त विश्राम एवं व्यायाम करने की योजना बनाई है जिससे हमें अपनी पूरे एकाग्रता के साथ पूर्ण सत्ता से सुन सकने हेतु सम्बल प्राप्त हो। हमने श्री गुरुमाई के सन्देश को प्राप्त करने का क्या महत्व है, इस बात पर सत्संग से पहले मनन करने का भी समय निश्चित किया है। और हम सत्संग के बाद भी मनन करना जारी रखेंगे तथा सत्संग में भाग लेने वाले अपने परिवार एवं मित्रों के साथ भी अनुभव बाँटेंगे।

जनवरी २०१६ में, एक मधुर सरप्राइज़ सत्संग के लिए वैश्विक हॉल में हम, आप सबके साथ भाग लेने की कामना करते हैं।

आप, अपने प्रियजनों, तथा सर्वजन, इस दिसम्बर माह और आने वाले वर्ष में महान आनन्द, शान्ति, एवं प्रेम का अनुभव करें, ऐसी शुभेच्छा।

सप्रेम,
बेथ ड्युबोस